मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यसुधा

वर्ष: 4, अंक 71, अक्टूबर(द्वितीय), 2019

नवरात्रि विशेष:

बदलें सोच व चिंतन
'पूज्या' नहीं 'सक्षम' बनें 'नवदुर्गाएं'

डॉ० घनश्याम बादल

नवरात्रे चल रहे हैं और उनमें कन्यापूजन किया जा रहा है उन्हे भोजन कराया जा रहा है,, उनमें देवी के दर्शन किये जा रहे हैं, कितना अच्छा लगता है यह सब देखकर । पर, देश में बालिकाओं की हालत का सच क्या है यह भी किसी से छुपा नहीं है । नौ दिन का सम्मान, पूजन, खिलाना पिलाना एक तरफ और रोज की दुत्कार, उपेक्षा, दमन, गर्भ में मार देने की प्रवृत्ति एक तरफ, यही है इस आज का सच ।

खुद को आधुनिक, प्रगतिवादी, उदार,व नई सोच का, सिद्ध करने वाले देश में जब असलियत देखते हैं तो खुद को व समाज को उसी गहरे गर्त में पाते हैं जहां पाषाण काल में थे । पुरुषवादी सोच हमें छोड़ने को तैयार नहीं है, नारों में व दिखावे में आधुनिकता का 'मास्क' लगाए घूमना हमें खूब आता हैं । अच्छा हो कि इस बार हम यह पाखंड छोड़कर सारे साल ही बेटियों को बढ़ाएं व बचाएं व मान देते हुए उन्हे उनका हक भी दें ।

लिंग भेद की न हो कोई जगह:

न्यायालयों के फैसलों या सरकार के कानूनों अथवा समाजविज्ञानियों के हर तर्क व नसीहत के बाद भी समाज बदलने को तैयार नहीं हैं । कहने को तो लिंग भेद की कोई जगह नहीं हैं पर जब अपने घर की बात आती है तो जायज नाजायज सब भूल कर बेटे को बेटी पर तरजीह देने में न कोई हिचक ही नहीं है। नालायक बेटों को हर तरह से बचाना, उन्हे प्रश्रय देना व बेटियों को पेट में मार देना या फिर उन्हे दोयम तरीके से पालना, उन्हे उनके हक से वंचित रखना उनकी शिक्षा दीक्षा व शादी ब्याह तक मनमानी करना आज भी आम बात है । हमें अगर हम सचमुच बेटियों से न्याय करना है तो हमें बदलना होगा इस जीमन जूठन से कहीं आगे का सोचना होगा ।

तो व्यर्थ है यह पूजन...:

आज भी लड़कियों को अपनी मर्जी का जीवनसाथी चुनने का अधिकार देने को हम राजी नहीं हैं और यदि वह अपना यह अधिकार लेने की जुर्रत करती है तो उसके हिस्से में आती है ज़िल्लत, रुसवाई या मौत ।

जाति,गौत्र, वर्ग सम्प्रदाय या हैसियत के बहाने से लड़की को दबाने का कोई मौका हम हाथ से नहीं जाने देते है। तथाकथित सामाजिक रुतबे व सम्मान के कम होने की आशंका से ही हम 'पूजनीय कन्या' को मौत के आगोश में सुला देते हैं । अब यदि उसी ढर्रे पर चलना है तो व्यर्थ है यह पूजन अर्चन । इतना सब करने से बेहतर है उस पर इस तरह खर्च न करके उसकी शिक्षा दीक्षा पर खर्च करिए । उसकी रक्षा करिए उसे मान और सम्मान दीजिए ।

ताकि बच्चियां सुरक्षित महसूस करें:

एक नजर युवा दुनिया की हालत पर डालें तो दिल दहलाने वाला परिदृष्य दिखता है । बढ़ते अनाचार, व्याभिचार व बलात्कार आदि की सबसे ज्यादा मार लड़की पर पड़ती है, उसके उत्थान व प्रगति का श्रेय संस्थाएं, व्यक्ति, सरकार और समाज बड़े ही जोरशोर से लेते हैं पर समाज में ऐसा न हो इसका इंतजाम हम सब मिलकर भी नहीं कर पा रहे हैं। आज भी लड़की कभी शारीरिक तो कभी मानसिक संत्रास से गुजरने को बाध्य है। बचपन से जवान होने तक एक डर में ही जीने को विवश है। कन्याओं को पूजने या जीमाने से बेहतर हो कि हम यह डरावना माहौल हटाएं और एक ऐसा वातावरण बनाएं जिसमें बच्चियां सुरक्षित महसूस कर सकें।

सुरक्षा का कवच का तोहफा दें:

सहज विश्वास भी नहीं होता कि हम उसी भारतीय समाज में रह रहे हैं जिसमें लड़कियों की बेहद इज्जत करने की समृद्ध परंपरा रही है व जहां पर रिश्तों की एक ऐसी संस्कृति रही है जिसमें बेटी ही नहीं वरन् अपने आस पास की लड़कियों की भी पूजा की जाती रही है । पर, आज लड़कियां अपने ही घर में भी सुरक्षित नही रह गई हैं । घर व परिवारों में, स्कूलों में, बाजारों तथा ऑफिसों तक में वह ' मोलेस्टेशन' का शिकार बन रही हैं। तो आइए, इस बार उसे नवरात्रों में उसकी सुरक्षा का कवच का वह तोहफा दें हम सब मिलकर जो उसे निडर व निर्भय होकर जीना सिखाएं ।

दें खुला आसमान:

बलात्कार, दहेज , हत्या, असुरक्षा, बदनामी, छेड़खानी , अपमान का भय बेटियों के पंख कतरने को काफी है । पेट में उसकी भ्रूण हत्या कर देने जैसे कृत्य के चलते बालक बालिका अनुपात बुरी तरह गड़बड़ा गया है । **1000** पुरुषों पर महज **841** बालिकाओं का आंकड़ा डराता है। पर व्यक्तिगत स्वार्थों, व बंद व दकियानूसी समाज के चलते बदस्तूर बालिकाओं की भ्रूण हत्या जारी है बिना ये सोचे कि यदि यही होता रहा तो कहां जाएंगें वें **160** लड़के जिन्हे आने वाले समय में दुल्हन या तो मिलेगी ही नहीं या फिर एक बार फिर से बहुपत्नी प्रथा वापस खड़ी दिखेगी । कहीं फिर से 'जिस घर सुंदर बेटी देखी, ता घर जाय धरे हथियार' का तबाही युग वापस न लौट आए डर इस बात का भी है। इन कुप्रथाओं से उनके पंख न कतरें आप तो बेटियां आसमान छू कर दिखा देंगी ।

न करें भेदभाव:

आज भी लड़की होना दर्द का सबब है, भले ही कुछ प्रतिशत लोग लड़के - लड़की को बराबर मानते हों पर कड़वा सच यही है कि आज भी दोनों में फर्क है । कहने की बात और है व वास्तविकता को जीवन में उतारने की बात और । करीब **50** प्रतिशत मां बाप आज एक लड़के के पैदा होने पर 'बस' कर देते हैं पर लड़की के मामले में ये अनुपात ना के बराबर है । यदि कुछ लोग ऐसा करते भी हैं उनमें से एक बहुत बड़ा भाग बाद में इस या उस वजह से 'पछताता' देखा गया है । मां दुर्गा आपसे खुश हो इसके लिए हमें मिलकर दुर्गारुपा लड़की के दुःख दर्द दूर करने ही चाहिएं ।

पूजें नहीं, अधिकार दें:

आज पी वी सिंधु, सानिया मिर्जा, मैरीकॉम, या दूसरे नामों के साथ बेटियों ने नए काम हैं, नए से नए क्षितिज नापे हैं, पर कई मुकामों पर वह आज भी वहीं खड़ी है जहां वह आज से पचास साल पहले खड़ी थीं । पढ़ी लिखी लड़कियों ने बहुत कुछ पाया है तो ऐसा बहुत कुछ गंवाया भी है जो उसके लिये कहीं ज्यादा जरुरी था । अपने अधिकारों की कीमत लड़कियों को चुकानी पड़ी है । उसे पूजने से ज्यादा जरुरी है उसे अपने आसमान तय करने व उन्हे नापने का अधिकार देना।

ताकि सार्थक हों नवरात्र :

आज की लड़की हर क्षेत्र में लड़कों बेहतर ही कर रही है पर, दकियानुसी सोच ने लडकी को बराबर होने से रोककर उसके साथ अन्याय किया है । संवेदनशील लोग आसानी से समझ सकते हैं कि इन परिस्थितियों में नवरात्र का कन्यापूजन कितना थोथा व खोखला हो जाता है। कितना अच्छा हो कि हम आज समय के तराजू पर कन्या को निष्पक्षता से तोलें, उसको उसका हक दें, उसे 'पूज्या' या 'भोग्या' बनाने की बजाय सक्षम व समर्थ बनाएं व बनने दें ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें